पुस्तकालय ज्ञान का अकूत भंडार है। इसमें संरक्षित पुस्तक जीवंत देव प्रतिमाओं के समान हैं। ये हमारे सबसे अच्छे और सच्चे मित्र पथ प्रदर्शक और सफल जीवन जीने की प्रेरणा हैं। पुस्तकें हमारे ज्ञान , संस्कार, चरित्र तथा जीवन के निर्माण का सर्वश्रेष्ठ साधन भी है। ये न केवल हमारे ज्ञान की अभिवृद्धि करती है , बल्कि हमारे लिए अर्थोपाजन का साधन भी बनती हैं। सोशल मीडिया की सक्रियता और डिजिटल इंडिया के इस दौर में भी पुस्तकालय का महत्व कम नहीं हुआ है और न कभी कम होगा। टेक्नोलॉजी के इस दौर में युवा पीढ़ी की गूगल पर पूरी तरह निर्भरता सोच को सीमित कर देता है। पुस्तकालय की ओर युवा और नई पीढ़ी का कम होता रूझान चिंताजनक जरूर है। युवा एवं नई पीढ़ी को जागरूक कर हमें इनको पुस्तकालयों से जोड़ना होगा। पुस्तकों से जुड़ने से इनमें न केवल जीवन मूल्यों की समझ बढ़ेगी और जीवन के दुरूह समय में सही निर्णय लेने की मता बढ़ेगी बल्कि इनको गलत राह पर जाने से भी रोका जा सकेगा। बिहार विधान सभा का पुस्तकालय अपने आप में ज्ञान का महासागर है और बिहार के बड़े और समृद्ध पुस्तकालयों में से एक है। हमें राज्य में पुस्तकालयों की अभिवृद्धि और उसमें गुणात्मक सुधार का प्रयास करना होगा ताकि राज्य के विद्यार्थियों और शोधार्थियों तक पुस्तकालयों की पहुँच बन सके। पुस्तकालय हमें अपनी विरासत को पहचान कराने का साधन बने , ऐसा वातावरण बनाना होगा। बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा ने ये बातें पुस्तकालय दिवस के अवसर पर कही। इससे पहले श्री सिन्हा ने पुस्तकालय दिवस पर बिहार विधान सभा के पुस्तकालय में भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ. एस. आर. रंगनाथन के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इसके पश्चात वह बिहार विधान सभा की पुस्तकालय समिति की बैठक में भी सम्मिलित हुए। मौके पर बिहार विधान सभा के पुस्तकालय समिति के माननीय सभापति श्री सुदामा प्रसाद और इस समिति के माननीय सदस्य सर्वश्री राणा रणधीर सिंह, विजय कुमार, संदीप सौरभ, प्रमोद कुमार सिन्हा , राजवंशी महतो तथा रामवृक्ष सदा सहित सभा सचिवालय के प्रभारी सचिव श्री अनिल कुमार जायसवाल भी उपस्थित थे।

वि.स. के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा ने अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर सभी युवाओं को हार्दिक बधाई और शुभकामनायें दी। उन्होंने कहा कि देश के युवा चरित्रवान , संस्कारवान, आत्मानुशासित बन खुद को शिक्षित , कौशलयुक्त और हुनरमंद बनाते हुए देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान देकर स्वामी विवेकानंद द्वारा 21वीं सदी में भारत को विश्वगुरू बनने की भविष्याणी को सच करने में मददगार बने। युवा राष्ट्र के निर्माण में गवाह नहीं भागीदार बने।